मिसिङ एवं हिंदी भाषा की ध्वनि व्यवस्था: एक तुलनात्मक अध्ययन

प्रतिभा पायें*

prativapayeng5@gmail.com, pratibhasewali@gmail.com

१.० मिसिङ एवं हिंदी भाषा: संक्षिप्त परिचय

भारत की उत्तर पूर्वी राज्य असम में ब्रह्मपुत्र उपत्यका के लखिमपुर, शिवसागर, सदिया, तिनसुखिया, जोरहाट, डिब्रुगड़, धेमाजी, और दरङ जिलों की विभिन्न नदियों एवं उपनदियों के तटों पर मुख्य रूप से मिसिङ भाषी लोगों के निवास स्थल है। मिसिङ लोगों के भाषा को मिसिङ भाषा कहते हैं। मिसिङ लोग अपनी भाषा को 'तानि आगम' कहते हैं। 'तानि आगम' अर्थात मनुष्य जाति की भाषा। मिसिङ लोग मंगोल वंशीय, तिब्बत-वर्मी भाषा परिवार में उत्तर असम\अरूणाचल के अंतर्गत आते हैं।

हिंदी का प्रचलन शताब्दियों से चला आ रहा है। हिंदी भारत की सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा है। आज जिसे हम 'हिंदी का क्षेत्र' कहते हैं उसमें अधिक प्रमुख राज्य आते हैं। जैसे- उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली को हम हिंदी भाषा के क्षेत्र के नाम से जाने जाते हैं।

१.१ मिसिङ वर्णमाला:

अन्य प्राकृतिक भाषाओं के तरह मिसिङ भाषा में भी स्वर और व्यंजन इन दो प्रकारों के वर्ण पाये जाते हैं।

Gomug (गमुग) स्वरवर्ण:

मिसिङ भाषा में स्वरवर्ण को 'Gomug' (गमुग) कहते हैं।

उच्चारण अथवा ध्वनिगत विशिष्टता की दृष्टि से देखा जाये तो स्वर वर्ण को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

Mugdéng (मुगदङ) ह्रस्व-स्वर ध्वनि

Mugyar (मुगयार) दीर्घ-स्वर ध्वनि

ह्रस्व-स्वर ध्वनि के साथ यह ':' चिह्न प्रयुक्त कर दीर्घ-स्वर ध्वनि समझाया जाता है। इस तरह से देखा जाये तो मिसिङ भाषा में 14 Gomug (गमुग) या स्वर-वर्ण पाये जाते हैं। इस ':' चिह्न को मिसिङ भाषा में Mugyar (मुगयार) कहा जाता हैं।

मिसिङ भाषा में Gomug (गमुग) या स्वर को उच्चरित करने की प्रक्रिया:

Mugdéng (मुगदङ) ह्रस्व-स्वर ध्वनि

O, A, I, U, E, É, í.

---

* पी-एच.डी (आई. एल.ई), महात्मा गान्धी अन्ताराष्ट्रिय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

ऊपर उल्लिखित मिसिङ भाषा में व्यवहृत उच्चारण अंग्रेजी जैसा न होकर कुछ भिन्न है। जैसे–

O- 'O' का उच्चारण हिंदी 'ओ' जैसा न होकर असमिया की 'अ' जैसा है। यहां यह उल्लेखनीय है कि असमिया 'अ' का उच्चारण हिंदी 'अ' से थोड़ा भिन्न है। असमिया में 'अ' का उच्चारण करते समय होंठ गोलाकार हो जाते हैं वही पर हिंदी में 'अ' के उच्चारण में होंठ जरा फैल से जाते हैं।

A - मिसिङ भाषा में 'आ' का उच्चारण असमिया 'आ' के जैसा होता है, यहां यह उल्लेखनीय है कि मिसिङ भाषा में 'आ' ह्रस्व–स्वर है।

I - 'इ' का उच्चारण हिंदी ह्रस्व 'इ' जैसा उच्चारण होता है।

U- मिसिङ भाषा में 'U' का उच्चारण हिंदी भाषा की ह्रस्व 'उ' के जैसा होता है।

E- मिसिङ भाषा में 'E' का उच्चारण हिंदी भाषा के 'ए' जैसा होता है।

É - इसका उच्चारण मिसिङ भाषा में विशिष्ट है। भारतीय आर्य परिवार की भाषाओं में (हिंदी को लेकर) नहीं मिलते। यह उच्चारण चीनी भाषा में पाये जाते हैं।

í- मिसिङ भाषा में 'í' का उच्चारण 'É' जैसा ही विशिष्ट है। इसका भी लिप्यंतरण हिंदी भाषा में कर पाना कठिन है।

Mugyar (मुगयार) दीर्घ-स्वर:

O:, A:, I:, U:, E:, É:, í:.

मिसिङ भाषा में दीर्घ-स्वर का उच्चारण ह्रस्व – स्वर का दुगुना होता है, अर्थात् ह्रस्व– स्वर ध्वनि के उच्चारण समय दुगुना करने से दीर्घ-स्वर ध्वनि पाई जाती है। अन्य भाषाओं के तरह मिसिङ भाषा में भी व्यंजनो की उच्चारण के लिए स्वर की स्थिति अति आवश्यक है।

Mukténg (मुकतङ) व्यंजनवर्ण:

मिसिङ भाषा में व्यंजन वर्ण को Mukténg (मुकतङ)कहते हैं। Mukténg (मुकतङ)यानी व्यंजन वर्ण की कुल संख्या 17 हैं।

K G Ng
S J Ny
T D N
P B M
R L Y
W H

व्यंजनवर्णों के उच्चारण, असमिया के क, ग, ङ, च, ज, ञ आदि के जैसे उच्चारण किये जाते हैं। इसके दो वर्ण 'W' (व) और 'H' (ह) विशेष प्रयोजन में व्यवहृत होते हैं।

मिसिङ भाषा में महाप्राण वर्ण नहीं है। 'H'(ह) उच्चारण मिसिङ भाषा में नहीं होता। लेकिन मिसिङ भाषा के साथ जुड़ी भाषा पादाम, गालङ डफला आदि प्रतिवेशी भाषाओं में 'H' (ह) ध्वनि का उच्चारण पाया जाता है। इसलिए भाषा की आलोचना के लिए कभी कभी विदेशी शब्द और नामवाचक शब्द का व्यवहार के क्षेत्र में महाप्राण ध्वनि प्रयोजन के अनुसार 'H'(ह)वर्ण का प्रयोजन होता है, इस क्षेत्र में 'H' (ह) ध्वनि अंग्रेजी 'H'(एच)जैसा व्यवहृत होता है। जैसे: Pratibha, Dhaneswar, Bharat आदि। केवल H (ह) यदि शब्द में

व्यवहार किया जाता है, तब इसको असमिया के(ह)जैसा ही उच्चारण किया जाता है। जैसे– Himalaya, Himadri, Haren, Himachal इत्यादि।

उल्लेखनीय है कि मिसिङ भाषा की लिपि के लिए रोमन लिपि ग्रहण किया गया है। रोमन लिपि असमिया के 'ङ' और 'ञ' के समकक्ष प्रतीक ध्वनि के रूप में अंग्रेजी के 'Ng' और 'Ny' प्रतीक को व्यवहार किया जाता है। ये दो प्रतीक असमिया भाषा के 'ङ' और 'ञ' व्यंजन ध्वनियों के जैसे उच्चरित किए जाते हैं। यहां 'N' (न) और g (ग) एवं 'Y' (य) इस तरह का युग्माक्षर रूप नहीं होता। इनको 'Ng' (ङ) और 'Ny' (ञ) रूप का ही (diacritical mark) कूटयुक्त प्रतीक माना जाता है।

'Ng'(ङ)और 'Ny' (ञ) के साथ संयुक्त g (ग) और 'y' सदा स्वर वर्ण होता है और बिल्कुल सामने लिखना पड़ता है। लेकिन जब सभी शब्द व्यंजन–वर्ण में लिखते हैं तब 'g' (ग) एवं 'y' भी व्यंजन वर्ण होते हैं।

१.२ हिंदी वर्णमाला:

प्राय: सभी भाषाओं की तरह हिंदी में भी ध्वनियों के दो भेद हैं। स्वर एवं व्यंजन।

स्वर वे ध्वनियां हैं जिनके उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली वायु बिना किसी अवरोध के बाहर निकलती है।

हिंदी वर्णमाला में ग्यारह (11) स्वर हैं।

यथा- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिंदी में स्वरों के दो भेद हैं– ह्रस्व और दीर्घ।

ह्रस्व:

जिन स्वर वर्णों के उच्चारण में अल्प समय लगता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।

जैसे– अ, इ, उ, ऋ इत्यादि।

अ– अवृत्ताकार ह्रस्व स्वर है। जिन स्वरों के उच्चारण में होंठ फैले हुए रहते हैं उन्हें 'अवृत्ताकार' स्वर कहते हैं।

इ– होंठो की स्थिति की दृष्टि से 'इ' प्रसृत स्वर है।

उ– 'उ' 'वृत्ताकार' ह्रस्व स्वर है। जिन स्वरों के उच्चारण में होंठ गोल हो जाते हैं उन्हें 'वृत्ताकार' स्वर कहते हैं।

ऋ– 'ऋ' को हिंदी स्वर वर्ण में रखा जाता है। क्योंकि 'ऋ' चिह्न को स्वर के रूप में प्रयोग करते हैं। हिंदी में 'ऋ' वस्तुत: स्वर नहीं है। यह आक्षरिक ध्वनि है। इसका उच्चारण र + इ = रि होता है।

इस उच्चारण में व्यंजन + स्वर का संयोग है। जिन स्वर वर्णों के उच्चारण में अत्यधिक समय और जोड़ लगाना पड़ता हैं, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

आ– हिंदी में 'आ' अवृत्ताकार दीर्घ स्वर है।

ई– 'ई' अवृत्ताकार दीर्घ स्वर है। स्थान और प्रयत्न की दृष्टि से ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई' में कोई अंतर नहीं है।

ऊ– 'ऊ' अवृत्ताकार दीर्घ स्वर है।

ए– अवृत्ताकार संयुक्त स्वर है। इसका ह्रस्व रूप हिंदी में प्रयुक्त नहीं होता।

ऐ– 'ऐ' अवृत्ताकार संयुक्त स्वर है। इसका उच्चारण कंठ तालव्य है।

ओ– 'ओ' कंठौष्ठय स्वर है।

औ– 'औ' अवृत्ताकार संयुक्त स्वर है। इस 'औ' का स्वरूप 'अ' और 'उ' के संयोग से बनता है।

व्यंजन वर्ण:

व्यंजन वर्ण के उच्चारण स्वरों के सहायता किया जाता है। इन ध्वनियों के उच्चारण में उच्चारण अवयवों के द्वारा मुख के ऊपरी जबड़े में विभिन्न स्थानों पर वायु अवरोध होता है। अवरोध के प्रकारों के आधार पर व्यंजनों के अनेक भेद पाये जाते है।

हिंदी में तैंतीस व्यंजन वर्ण हैं।

'क' वर्ग (कंठ्य) क, ख, ग, घ, ङ

'च' वर्ग (तालव्य) च, छ, ज, झ, ञ

'ट' वर्ग (मूर्धन्य) ट, ठ, ड, ढ, ण

'त' वर्ग (दंत्य) त, थ, द, ध, न

'प' वर्ग (औष्ठ्य) प, फ, ब, भ, म

अंतस्थ: वर्ण य, र, ल, व

उष्म वर्ण श, ष, स

१.३ मिसिङ एवं हिंदी वर्णमालाओं की तुलना

मिसिङ एवं हिंदी इन दो भाषाओं की वर्णमालाओं के अध्ययन के बाद निम्नलिखित तुलना प्रस्तुत की जा सकती है-

1. मिसिङ भाषा में वर्णों की कुल संख्या 24 है। इनमें 7 स्वर और 17 व्यंजन वर्ण हैं लेकिन हिंदी में वर्णों की कुल संख्या 44 है। उनमे 11 स्वर और 33 व्यंजनवर्ण मिलते हैं।
2. मिसिङ भाषा की लिपि अंग्रेजी की रोमन लिपि है परंतु अंग्रेजी जैसी न होकर कुछ भिन्न है। जैसे – 'O' का उच्चारण 'ओ' जैसा न होकर असमिया की ह्रस्व स्वर 'अ' जैसा है ।
3. मिसिङ भाषा में महाप्राण वर्ण नहीं है। विदेशी शुद्ध और नामवाचक शब्दों के व्यवहार क्षेत्र में ही महाप्राण वर्ण का प्रयोग होता है। जैसे– Dhaneswar, Pratibha, Bharat,.
4. मिसिङ भाषा आक्षरिक है, जिस तरह लिखी जाती है उसी तरह पढ़ी भी जाती है। मिसिङ भाषा की तरह ही हिंदी भी आक्षरिक है।
5. मिसिङ भाषा में विकसित वर्ण नहीं हैं। लेकिन हिंदी में कई विकसित वर्ण हैं।
6. मिसिङ भाषा में 'é' और 'í' स्वर वर्ण के उच्चारण की विशिष्टता है लेकिन हिंदी में इस तरह के विशिष्ट स्वर वर्ण नहीं हैं।
7. मिसिङ भाषा में व्यंजन वर्णों को उच्चारण के अनुसार अलग अलग वर्णों में रखा गया है, इसी तरह हिंदी में भी किया गया है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची:

१. काग्युङ, भृगुमुनि: मिसिङ संस्कृति, आलेख प्रकाशन, उरुखापजा, बिरुबारी, गुवाहाटी: 16, कामरुप, असम।

२. नरह, जोगेश्वर: मिसिङ लुसग गमलाम (मिसिङ व्याकरण), प्रथम प्रकाशन, 1995, जोरहाट, असम।

३. पा:दुन, नाहेंद्र: मिसिङ गमलाम (मिसिङ व्याकरण), आसाम स्टेट टेक्स्ट बुक प्रोडक्शन ऐण्ड पब्लिकेशन लिमिटेड, गुवाहाटी।

४. मिलि, निलेश्वर, पेगु मनोज: मिसिङ आगम लुयिर (मिसिङ भाषा शिक्षण), प्रथम प्रकाशन, 1995, असम।

५. बरुवा, डॉ. भीमकांत: असमेर भाषा, मृणालकांति भट्टाचार्य स्टूडेन्ट्स एम्पोरियम प्रकाशन, डिब्रूगढ़।

६. अग्रवाल, डॉ. मुकेश: हिंदी भाषा की संरचना, के. एल. पचौरी प्रकाशन, 8\डी. ब्लॉक, एक्सटेंशन इंद्रपुरी, लोनी गांजियाबाद।

७. तिवारी, उदय नारायण: हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, लोकभारती प्रकाशन, 15- A, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।

८. तिवारी डॉ. भोलानाथ: हिंदी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण, शब्दाकार प्रकाशन 159, गुरु अंगद नगर, दिल्ली।